बालक का नैतिक विकास सिद्धांत (कैरोल गिलिगन के सन्दर्भ में)

* Introduction :-

गिलिगन एक अमेरिकी महिला मनोचिकित्सक थी, इनका जन्म 28 नवम्बर 1936 ई० में अमेरिका के न्यूयार्क शहर में हुआ था। वह लॉरेंस कोहलबर्ग के नैतिक सिद्धांत की तरह ही नैतिक विकास सिद्धांत में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

कैरोल गिलिगन की पुस्तक 'In a Different Voice Psychological Theory and Women's Development' में नैतिकता संबंधित विचारों को दिया है। कोहलबर्ग के नैतिक विकास सिद्धांत द्वारा यह दर्शाया गया है कि नैतिक तर्क के कई चरणों के माध्यम से बालक का नैतिक विकास होता है। परन्तु गिलिगन ने इनसे अलग हटकर लिंग (Gender) के अंतर पर जोर दिया है अर्थात पुरुषों की तुलना में महिलाओं के विचार कम नहीं होते हैं।

* गिलिगन के नैतिक विकास सिद्धांत के स्तर (Level) :-

कोहलबर्ग की तरह कैरोल गिलिगन ने भी नैतिक विकास सिद्धांत को तीन स्तरों में विभाजित किया है —

→ (1) पूर्व औपचारिक स्तर (Pre-conventional stage)
→ (2) औपचारिक स्तर (Conventional stage)
→ (3) उत्तर औपचारिक स्तर (Post conventional stage)

(1) पूर्व औपचारिक स्तर (Pre-conventional stage) :-

जीवित रहने के लिए व्यक्ति अपनी देखभाल करता है। प्रत्येक व्यक्ति एक बच्चे के समान व्यवहार करता है।

स्वयं को मजबूत समझता है, तथा स्वयं का औरों दूसरे के मध्य संबंधों को देखता है।

(2) औपचारिक स्तर :- इस स्तर में गिलिगन ने महिलाओं पर शोध कार्य किए जिसमें उन्होंने पाया कि महिलाओं में दूसरे के बारे में निःस्वार्थता तथा देखभाल का भाव पाया जाता है।

(3) उत्तर औपचारिक स्तर :- इसमें शोध के फलस्वरूप यह पाया कि महिलाओं ने अपनी पसंद के परिणामों के लिए जिम्मेदारी लेने और स्वयं के जीवन पर नियंत्रण प्राप्त करने पर जोर दिया अर्थात दूसरे की जिम्मेदारी उठाते हुए स्वयं पर कोई समस्या आ भी जाती है तो उसे अनदेखा करना। कुछ लोग नैतिकता के इस स्तर तक नहीं पहुँच पाते हैं।

इसप्रकार गिलिगन ने अपने शोधों के माध्यम से यह पाया कि यदि व्यक्ति नैतिकता के प्रथम स्तर पर है तो यह केवल सामाजिक नैतिकता है और यदि व्यक्ति अंतिम स्तर तक पहुँचा है तो यह सैद्धांतिक नैतिकता है अर्थात महिलायें यह अच्छी तरह जानती है कि अपनी खाहिशों के साथ-साथ दूसरे की खाहिशों का ध्यान कैसे रखा जाये? हमारे समाज की महिलायें वास्तव में दूसरों की बहुत सहायता करती हैं वे अपने बारे में भी सोचना चाहती हैं परन्तु वे दूसरों के विषय में अधिक चिंता, ध्यान करती हैं।

शिक्षा के संदर्भ में

(महिला एवं पुरुष)

गिलिगन का मानना है कि शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण है, चाहे वह महिला हो या पुरुष। दोनों को ही शिक्षा के क्षेत्रों में एक दूसरे की सहायता करनी चाहिए।

★ गिलिगन के नैतिक विकास सिद्धांत में सांस्कृतिक तथा लैंगिक विभिन्नता :-

कैरोल गिलिगन ने अपने शोध कार्य के लिए लिंगीय विभिन्नता को आधार बनाया। उनका मानना था कि पुरुष समाज के सभी प्रकार के फैसले करते हैं उनकी पहचान सामाजिक संरचना के साथ ही जुड़ी हुई है। पुरुषों का आवाज भारी एवं तेज होता है जिस कारण वे नैतिक फैसले लेते हैं वहीं महिलायें आदि काल से ही पुरुषों के अधीन रही हैं परन्तु स्त्री संबंधों के महत्व और लोगों के देखभाल पर ज्यादा जोर देती है।

अर्थात गिलिगन के अनुसार महिलाओं की नैतिकता जिम्मेदारियों और रिश्तों की समझ के आस-पास केंद्रित होता है अतः समाज में उन्हें सबकुछ सोच समझकर करना पड़ता है।

इसप्रकार हम देखते हैं कि सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक क्षेत्रों में भी महिलाओं के नैतिक कर्तव्यों में विभिन्नता पाई जाती है। बालक या बालिका अपने समाज के नैतिक गुणों को तब तक नहीं जानता जब तक की वह एक किशोर या किशोरी न बन जाये। इसतरह सामाजिक संरचना के आधार पर नैतिक मूल्य बदल जाते हैं। अतः गिलिगन के अनुसार जिस सामाजिक परिवेश से बच्चे आते हैं उन्हें उसी व्यवस्था तथा परम्पराओं के नैतिक मूल्यों को सीखने के लिए प्रेरित किया जाता है।

0